thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 42
सृष्टि संवत् 1960853115
25 जनवरी 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 42, 22/25 जनवरी 2015 तदनुसार 12 माघ सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान अपूर्व दाता सर्वाधिक याज्ञिक

ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।
विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्।।

–ऋ. 5/3/5

शब्दार्थ- हे **अग्ने**=ज्ञानस्वरूप ! **यज्ञ**= साधक प्रभो ! **त्वत्**= तुझसे **पूर्वः**:= पूर्ववर्ती, कोई भी **होता** = दाता **न** = नहीं है और न ही कोई **यजीयान्**= अधिक याज्ञिक है। हे **स्वधाव**= अपनी शक्ति से सुरक्षित भगवन् ! और **न**= न ही **काव्यैः**:= काव्यों के द्वारा, क्रान्ति दर्शनों के द्वारा कोई **परः**:= मुखिया **अस्ति**= है। **च** = और **यस्याः** = जिस **विशः** = प्रजा का तू **अतिथिः**:= आत्मा **भवासि**= हो जाता है, हे **देव** = देव ! भगवन् ! **सः** = वह **यज्ञेन** = यज्ञ के द्वारा **मर्तान्** = मनुष्यों को **वनवत्** = निरन्तर भक्तियुक्त कर देता है।

व्याख्या= ईश्वरविश्वासी सभी आस्तिक मानते हैं कि जब यह जहान न था, तब भी भगवान था। वेद भी कहता है-

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे –ऋ. 10/121/1

सूर्यादि सभी प्रकाशकों का आधार परमात्मा इस संसार से पूर्व विद्यमान था। जब भगवान् सबसे पूर्व विद्यमान था, उससे पूर्व किसी की सत्ता नहीं थी, तब फिर उसकी महत्ता में क्या संदेह? संसार-रचना करके सारा संसार जीवों के अर्पण कर दिया, इससे बड़ा दान और दानी कहां और कौन हो सकता है?

कैसी अद्भुत रचना है। आग पानी को सुखा देती है, पानी आग को बुझा देता है। इन परस्पर विरुद्ध स्वभाव वाले पदार्थों की संगति करके कैसी विचित्र रचना रची है। सचमुच उससे बढ़ कर मेल करने वाला कोई नहीं है।

न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्।

संसारी जन समान गुणों वाले पदार्थों को मिला कर कुछ बनाया करते हैं किन्तु उसकी रचना देखो! मित्र और वरुण को–ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन को विद्युत के द्वारा मिला कर जल बना देता है। ऑक्सीजन जलाती है, हाइड्रोजन जलता है, विद्युत के द्वारा दोनों का मेल होकर शीतलता देने वाला जल बनता है। प्रभु की इस अनुपम लीला को देख कर ब्राह्मण ग्रंथों ने कहा- अग्नीषोमीयं जगत् यह संसार आग-पानी का मेल है, अग्नि जल का खेल है।

पदार्थ रचना से पूर्व पदार्थों के गुणधर्मों का ज्ञान आवश्यक है, उनसे कार्य लेने की योग्यता तथा क्षमता भी चाहिए, इस गुण में भी भगवान् का स्थान प्रधान है।

न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।

हे स्वशक्ति से सुरक्षित ! काव्यों के द्वारा, ज्ञानों के द्वारा भी और कोई मुखिया नहीं है। मनुष्य अपने कार्य के लिये सदा परमुखापेक्षी रहता है। कोई छोटे से छोटा कार्य ऐसा नहीं, जिसे वह दूसरों की रंचमात्र सहायता लिये बिना कर सके, किन्तु परमात्मा स्वधावः है- अपनी शक्ति से सब कुछ कर लेता है। कवियों ने मनु की सन्तान की महिमा का गान करते हुये कहा-

स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूति।

मनु की सन्तान अपने सामर्थ्य से सुरक्षित है। कवियों की इस युक्ति में अतिशयोक्ति है, किन्तु मनु के पितरों का पिता तो सचमुच स्वधावः= स्ववीर्यगुप्त है। भगवान की शक्ति का एक वर्णन कौन कर सकता है? अनन्त-अपार उसकी शक्ति है। वह सबमें रह रहा है, किन्तु दीख नहीं रहा। मानव के अन्तस्तल में वह विराजता है, किन्तु मानव उससे विमुख है। किसी भाग्यवान् साधनासम्पन्न के हृदय में, आत्मा में अचानक उसका चमकारा हो जाता है। इस बात को वेद ने अपने सुन्दर शब्दों में कहा- विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि जिस प्रजा का तू अतिथि हो जाता है।

अतिथि के आने की कोई तिथि नहीं। जाने कब आ खड़ा हो, किन्तु मनुष्य को अतिथि सत्कार के लिये तो सदा तैयार रहना चाहिये। ऐसा न हो कि अतिथि आए और सत्कार पाये बिना चला जाये। लौकिक अतिथि के सम्बन्ध में यम ने कहा-

आशा प्रतीक्षे संगतम् सूनृतां चेष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।
एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन वसति ब्राह्मणो गृहे।।

–कठो 1/17

जिस मंदभागी गृहस्थ के घर ब्राह्मण अतिथि भूखा रहता है, उस मन्दमति की आशा, प्रतीक्षा, संगति, मधुरवाणी, यज्ञयाग, दानपुण्य, सन्तान, हैवान (पशु) सभी नष्ट से हो जाते हैं।

अरे लौकिक, सांसारिक, अतिथि के सत्कार न करने का यह कुफल है, तो ब्राह्मणों के ब्राह्मण, परम ब्राह्मण के सत्कार न करने का कितना बड़ा कुफल होगा? जो भाग्यशील उस अनुपम, निराले अतिथि को पहचान लेता है और उसका करता है, सत्कार तो-

स यज्ञेन वनवदेव मर्तान्- वह भगवान, यज्ञ के द्वारा, अतिथियज्ञ के द्वारा मनुष्य को भक्तियुक्त कर देता है। वह अतिथियज्ञ निराला है।

दयामय अतिथे। आओ। अपना यज्ञ सिखाओ।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

इस बात की साक्षी इस्लाम की एक विधि में मिलेगी और उसका एकमात्र कारण समय का नियत होना है। उनका कोई कार्य नियत हो वा न हो, परन्तु नमाज़ का समय तो नियत है, निश्चित है। उसमें कोई हेर-फेर नहीं। इसका परिणाम है कि मुसलमानों की नमाज़ में कोई चीज बाधक नहीं हो पाती। बाधक तो क्या, साधक ही बन जाती है। हमने यात्री-गाड़ियों को स्टेशन पर इसलिए रुके देखा है कि कुछ नमाज़ी-नमाज़ पढ़ रहे हैं। गाड़ी का नियत समय टल सकता है। गाड़ी का अनियत होना कोई नई बात नहीं, यह तो आये दिन होता ही रहता है, आज भी हो गया तो क्या अन्धेर आ गया! क्या जुम्मे की नमाज़ के समय सरकारी दफ्तरों का काम इसलिए नहीं रुक जाता कि यह कुछ के नमाज़ का समय है। यह है प्रभाव समय के नियत होने का।

अत: स्वाध्याय का समय भी नियत होना चाहिए। स्थान में कदाचित् अनियतता सह्य हो, परन्तु समय की नियतता अनिवार्य है।

ग्रन्थ नियत हों : जहां स्वाध्याय का स्थान नियत हो, काल नियत हो, वहां पाठ्य-ग्रंथ भी नियत हों। ऐसा न हो कि कुछ पृष्ठ एक ग्रन्थ के पलटे, कुछ दूसरे के, फिर तीसरा उठा लिया, पूर्णतया पढ़ा एक भी नहीं। इससे क्या होगा कि व्यक्ति के स्वाध्याय में स्थिरता न आ पायेगी और उसका स्वाध्याय कभी स्थायी और ठोस न हो सकेगा, जानदार न हो सकेगा। मन की चंचलता की भांति उसके सिद्धान्त भी चंचल रहेंगे। जिस ग्रन्थ को भी उठाया कि कुछ पन्ने उलट-फेर कर रख दिया; जब उसने ग्रन्थ का अन्त ही सिद्ध नहीं किया, तो फिर सिद्धान्त भी क्या निश्चित कर पायेगा ? अत: स्वाध्याय के लिए ग्रन्थ भी नियत और विधि भी नियत हो। स्वाध्याय शब्द का अर्थ दिखाते हुए हम यह बता आये हैं, कि अध्याय शब्द का अर्थ वेद है; अत: स्वाध्यायशील व्यक्ति का नियत पाठ्य-ग्रंथ वेद है। जब व्यक्ति नियत होकर नियत अध्याय-ग्रन्थ वेद को आद्योपान्त पढ़ेगा, तभी कह सकेगा कि मेरा यह नियत सिद्धान्त है, निश्चित मत है, क्योंकि मैंने वेद का अन्त देख लिया है, मैं वेदान्त को जान पाया हूं, सिद्धान्त समझ गया हूं।

ग्रन्थ के नियत होने का एक और भी लाभ होता है कि व्यक्ति का ध्यान नियत ग्रन्थ के नियत विषय पर केन्द्रित हो जाता है। नियत समय के अतिरिक्त जब-जब भी समय मिलता है, मन उसी का चिन्तन करने लगता है, जिससे तारतम्य निरन्तर बना रहता है। चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते भी विचार आता रहता है, चिन्तन-सूत्र में काल-क्षण पिरोया जाने लगता है और नियत समय आते ही वह सूत्र कतने लगता है। परन्तु यह तभी होता है, जब नियत-ग्रन्थ की पूनी हाथ से न छूटे। जब तक एक ग्रंथ को आद्योपान्त न पढ़ लें, तब तक दूसरे ग्रन्थ को हाथ न लगाएं।

इसके लिए अत्यन्त धैर्य्य की आवश्यकता है। कहीं मन उचाट न हो जाए, ऊब न जाए, बोर न हो जाए, इसलिए विधि भी नियत होनी चाहिए। इसीलिए भगवान् मनु ने लिखा है नैत्यकं विधिमास्थित:। मन नित्य की जाने वाली विधि में स्थित हो, दृढ़ हो। यहां 'आस्थित' शब्द ने 'नियत:' के अर्थ में चमत्कार पैदा कर दिया है। नियत व्यक्ति ही आस्थित हो सकता है और आस्थित व्यक्ति ही सब ओर से स्थित, निवृत्त और नियत हो सकता है—**नैत्यकं विधिमास्थित:।**

नित्यविधि: विधि शब्द का अर्थ है विधान, कारण। 'विदधाति (अनेन) स्वाध्यायमिति विधि:।' जो किसी भी कार्य को विशेषतया धारण किये रहता है उसे ही कारण, विधान अथवा विधि कहते हैं। इसीलिए हर आचरण की विधियां बनी है। स्वाध्याय की भी विधियां हैं। कहीं-कहीं तो वे अत्यन्त जटिल हो गई हैं और कहीं-कहीं अत्यन्त शिथिल। कहीं तो हम यह लिखा हुआ पाते हैं कि नगर वा ग्राम से दूर चला जाए, पूर्वाभिमुख हो आचमन और मार्जन करके पद्मासन पर बैठकर करतल से ढककर और दो हाथों के बीच दर्भ को रखकर स्वाध्याय करें। अन्यत्र लिखा पाते हैं कि यदि बाहर न जा सके तो उसे गांव ही में, दिन या रात्रि में, स्वाध्याय कर लेना चाहिए। यदि वह बैठ न सके तो खड़े होकर या लेटे ही लेटे स्वाध्याय करना चाहिए, क्योंकि स्वाध्याय करना मुख्य है, देश-काल और विधियां गौण हैं। इन विधि-नियमों में शिथिलता इसलिए की गई है कि कोई उन्हें ही मिष बनाकर स्वाध्याय को ही स्थगित न कर बैठे। कहीं कहने लगे कि यहां 'अपां सामीप्य' नहीं था, इसलिए स्वाध्याय नहीं कर सके, जल के अभाव में आचमन नहीं कर सके। बिना आचमन किये स्वाध्याय कैसे करते ? विधि-नियमों में शिथिलता लाने का तात्पर्य केवल स्वाध्याय में सबको प्रवृत्त करना है और विधि-नियमों में कठोरता लाना स्वाध्याय को परिष्कृत और परिमार्जित करने के उद्देश्य से होता है।

विधि में केवल बाह्य आचार सम्मिलित नहीं है, अपितु जिस ग्रन्थ का अध्ययन करें, उसका साङ्गोपाङ्ग अध्ययन ही 'विधि' कहलाता है। व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष आदि का ज्ञान भी आवश्यक है, परन्तु गौण और मुख्य का ध्यान रखना आवश्यक है, साधन और साध्य का ध्यान रखना आवश्यक है। कहीं अङ्गोपाङ्ग के मोह में आत्मा की अवहेलना न हो जाये! व्याकरण, निरुक्त, छन्द आदि अङ्ग हैं और वेद (अध्याय) आत्मा है। यह तो सह्य हो सकता है कि शरीर में आंख न हो, परन्तु यह कदापि सह्य नहीं कि शरीर में आत्मा ही न हो। यह तो सह्य हो सकता है कि व्यक्ति व्याकरण का पण्डित न हो, परन्तु यह कैसे सह्य हो सकता है कि व्यक्ति स्वाध्याय से शून्य हो ? स्वाध्याय आवश्यक है, वह पुन: विधिपूर्वक साङ्गोपाङ्ग हो तो अत्युत्तम!

स्वाध्यायशील व्यक्ति यह न सोचे कि मुझे इतने पृष्ठ वा इतने अध्याय समाप्त करने हैं। वह तो यह देखे कि जितना करना है, वह मनन और निदिध्यासनपूर्वक करना है, फिर उसकी मात्रा स्वल्प ही क्यों न हो। जो पढ़े, जितना पढ़े, उसमें तल्लीन होकर पढ़े, शब्द-शब्द में पैठने का प्रयत्न करे। इस प्रकार नित्य स्वाध्याय करने से वेद स्वयं अपना रहस्य प्रकट करने लगता है।

अध्ययन करते हुए यह विचारना चाहिए कि इस स्थल पर अमुक शब्द ही क्यों रखा गया है ? यदि इसके स्थान पर अन्य पर्यायवाची शब्द रख दिया जाता, तो क्या हानि हो जाती ? व्यक्ति स्वयं इसके स्थान पर पर्यायवाची शब्द रखकर देखे तो ज्ञात होगा कि मानो मूल की आत्मा निकल गयी। इसलिए वेद में अनुक्रम, आनुपूर्वी का ध्यान रखते हुए शब्द-शब्द और अक्षर-अक्षर की रक्षा की गई है। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करना अपराध माना गया है। शाखाग्रन्थों में ऐसा किया भी गया है। वह सब अपने-अपने अभीष्ट अर्थ की सिद्धि के लिए ही किया है। परन्तु संहिता-भाग में ऐसा नहीं होने दिया गया, अन्यथा इस धांधली का कहीं भी अन्त न होता। फिर तो ग्रन्थ का ही अन्त हो जाता, उसका मूल रूप ही बिगड़ जाता। इसलिए मन्त्र-मन्त्र में पैठकर, शब्द-शब्द में घुसकर, अर्थ जानने का यत्न करना चाहिए। इसी बात को उदाहरण से स्पष्ट करते हैं।

आइए, हम दो पर्यायवाची शब्दों का विवेचन करके देखें। वे दो शब्द है नर और जन। ये दोनों शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं, परन्तु गहन विचार करने से इन दोनों शब्दों का महत्त्व कुछ स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाएगा। नर शब्द का अर्थ है नेता, ले चलने वाला, जबकि जन शब्द का अर्थ है वह व्यक्ति जिसका प्रादुर्भाव मात्र हुआ है, जो जना गया है। वास्तव में दोनों ही शब्द मनुष्य अर्थ के वाचक हैं, परन्तु नर शब्द में जो ओज है, वह जन शब्द में कदापि नहीं। कौन चाहेगा कि कोई उसे यह समझे, कि वह तो नाममात्र का इन्सान है, बस जैसे-तैसे जना गया, उसे यह चोला मिल गया इत्यादि। प्रत्येक व्यक्ति नर कहलाने में गौरव अनुभव करेगा; नर कहलाते ही उसमें नेतृत्व का भाव संचार करने लगता है कि वह नयन का सामर्थ्य रखता है। यह सब शब्दों की 'मीमांसा' का परिणाम है।

नर शब्द का अर्थ: नर शब्द का अर्थ नेता है, यह कैसे जाना गया ? क्या नयार्थक ''नृ'' धातु के प्रयोग से ? नहीं, केवल इतने मात्र से नहीं। यों तो नय अर्थवाली धातुएं और भी हैं, जिनका अर्थ भी ले चलना ही है। फिर अनेक शब्दों के निर्माण की क्या आवश्यकता थी ? एक ही ''नय'' अर्थवाली धातु से एक शब्द बना लिया जाता, जो नेता का वाचक होता। व्यर्थ का अर्थभार तो न ढोना पड़ता। नहीं, ऐसा समझना भूल होगी। एक अर्थ के देने वाले बहुत-से शब्दों का अपना महत्त्व होता है। वे सभी शब्द अपने अर्थ के भिन्न-भिन्न रूपों पर प्रकाश डालते हैं। जैसे यही ''नर'' शब्द है, जिसका अर्थ है कि ''अग्रे नयति इति अग्नि:'' जो आगे ले जाता हो वह अग्नि। अब ये दोनों शब्द ही एक अर्थ के वाचक हो गये। दोनों का अर्थ है ले जाने वाला ''नेता''। फिर सोचिए कि इन दो शब्दों की क्या आवश्यकता थी ? ये दोनों शब्द नेता के भिन्न-भिन्न रूपों पर प्रकाश डालते हैं। इन दोनों ने ही नेता की व्याख्या कर दी। ''अग्नि'' शब्द ने कहा कि नेता वह है, जो आगे ले जाए (अग्रे नयति इति अग्नि:)। पीछे हटाने वाले को नेता न कहेंगे! जो लक्ष्य की ओर न ले जाकर लक्ष्य भ्रष्ट करा दे, वह नेता नहीं हो सकता, यह नेता की व्याख्या ''अग्नि'' शब्द में निहित है।

(क्रमश:)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

भारत का गणतन्त्र दिवस-२६ जनवरी

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया था। तब से लेकर हम इस दिन को सारे भारत वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन से भारत वर्ष ने गुलामी से मुक्त होकर नया जीवन जीना शुरू किया था और साथ ही लोकतान्त्रिक गणराज्य की नींव रखी गई थी। भारत के लोगों ने चिरकाल की गुलामी के बाद सुख की सांस ली थी।

पहले हम मुसलमानों के अधीन रहे और फिर सैंकड़ों वर्ष अंग्रेजों के अधीन रहे। पराधीनता में सुख कहां? इसलिए हमारे देशवासियों ने गुलामी की घुटन को महसूस किया और आजादी के लिए संघर्ष करना आरम्भ कर दिया। 1857 से लेकर 1947 तक तो यह संघर्ष लगातार चलता रहा। हमारे देश के अनेक क्रान्तिकारियों और नौजवानों ने अपना बलिदान दिया। उस बलिदान के फलस्वरूप हम 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन हो गए और अंग्रेजों को विवश होकर यहां से जाना पड़ा।

इस आजादी के लिए अनेकों माताओं ने अपने बेटे दिए, अनेकों पत्नियों ने अपने पति दिए और अनेकों बहनों ने अपने भाई दिए। देश के वीर जवानों ने अपना रक्त बहाकर यह स्वाधीनता प्राप्त की थी। यह आजादी की लड़ाई किसी राजा ने नहीं लड़ी थी। उस समय भारत में कई राजा थे परन्तु वह भी अंग्रेजों के गुलाम बने हुए थे। उन्होंने भी इस आजादी की लड़ाई के लिए कोई योगदान नहीं दिया था। देश की सारी जनता ने अपना खून पसीना एक करके इस आजादी को पाया था। इस आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का भी कम योगदान नहीं था। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सबसे प्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था और भारतीय जनता में देश प्रेम का शंखनाद चारों ओर गुंजाया था। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महर्षि दयानन्द की प्रेरणा कार्य कर रही थी। स्वामी दयानन्द ने स्थान-स्थान पर घूम कर क्रान्ति का शंखनाद किया था। इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों का संगठन करने वाले महान् क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी स्वामी दयानन्द का आशीर्वाद प्राप्त था। उन्हीं की प्रेरणा से वह वहां गए थे और उनके नेतृत्व में इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों ने महान् कार्य किए थे जिससे अंग्रेज सरकार घबरा उठी थी। उधम सिंह ने भरी सभा में अंग्रेज को अपनी गोली का निशाना बनाकर अपनी वीरता का परिचय दिया था। भारत में भी क्रान्तिकारी संगठनों की स्थान-स्थान पर स्थापना हो चुकी थी। राम प्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्र शेखर आजाद, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द और अनेकों क्रान्तिकारियों ने इस आजादी की लड़ाई के लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर किया था। इस आजादी की लड़ाई को बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों ने लड़ा था। सभी मत सम्प्रदायों के लोगों ने संगठित होकर इस आजादी की लड़ाई में अपना-अपना योगदान दिया था। उसी के परिणामस्वरूप हमारा देश आजाद हुआ। भारत आजाद होने पर प्रश्न पैदा हुआ कि देश की शासन प्रणाली कैसी हो? इसलिए देश के नेताओं ने मिल कर निर्णय लिया कि अब देश में रजवाड़े शाही नहीं चलेगी। जिस देश की स्वाधीनता एक लम्बे समय तक संघर्ष करके उस देश की जनता ने प्राप्त की है, उस देश में शासन भी जनता का ही होना चाहिए। इसलिए गणतन्त्रीय शासन प्रणाली की व्यवस्था की गई और 26 जनवरी 1950 को उसकी विधिवत घोषणा कर दी गई। इस घोषणा के बाद छोटे बड़े सभी राजाओं को तिरंगे झण्डे के नीचे आना पड़ा और सभी पर भारतीय संविधान जो इस दिन घोषित किया गया था लागू कर दिया गया।

आज उस दिन को पूरा हुए 65 वर्ष हो गए हैं। हम बड़े गर्व से कह सकते हैं कि हम न केवल स्वाधीन हैं बल्कि आज हमारे देश में प्रजा का अपना शासन है। आज प्रजा की वोटों से ही नेता चुने जाते हैं। यह ठीक है कि आज वोटों के जोर पर कई गलत व्यक्ति भी चुन कर आगे आ जाते हैं जिससे देश का अहित भी होता है परन्तु अगर जनता सावधान होकर अपने वोट का प्रयोग करें तो अच्छे और चरित्रवान् लोग आगे आ सकते हैं जो राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं। जनता का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे लोगों को चुनकर संसद और विधानसभाओं में भेजे जो चरित्रवान हों, राष्ट्रभक्त हों तथा जिनके अन्दर राष्ट्र का विकास करने की क्षमता हो। धनबल और बाहुबल के द्वारा जो लोग सत्ता को प्राप्त करते हैं, वे अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरूपयोग करते हैं। ऐसे स्वार्थी और चरित्रहीन नेताओं के कारण राष्ट्र का अहित होता है। ऐसे लोगों का उद्देश्य सिर्फ सत्ता प्राप्त करना होता है। उनके लिए राष्ट्रहित कोई महत्व नहीं रखता।

26 जनवरी के दिन को हम राष्ट्रीय स्तर पर गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। इस दिन को हम देशभक्ति से ओतप्रोत होकर बड़े-बड़े भाषण देते हैं परन्तु राष्ट्र के लिए हमारा क्या कर्त्तव्य है इसका चिन्तन नहीं करते। केवल गणतन्त्र दिवस मना लेने से हम अपने उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। आज आवश्यकता है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्रहित के बारे में चिन्तन करें। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा, अपने मताधिकार का सही प्रयोग करेगा तभी गणतन्त्र दिवस मनाना सार्थक होगा।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

लोहड़ी का पर्व मनाया गया

आर्य मॉडल सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल बठिण्ड़ा के प्रांगण में दिनांक 13-01-2015 को लोहड़ी का पर्व स्कूल के प्रधान श्री पी.डी. गोयल की उपस्थिति में मनाया गया। पर्व का शुभारम्भ गायत्री मन्त्र के उच्चारण के द्वारा आर्य समाज के पुरोहित द्वारा किया गया। इस शुभ अवसर पर स्कूल कमेटी के समस्त मैम्बर, स्कूल के प्रधानाचार्य श्री विपिन गर्ग, समस्त प्राध्यापकगण तथा समस्त विद्यार्थी उपस्थित थे। इस उपलक्ष्य पर स्कूल के छात्रों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति भी पेश की। स्कूल के प्रधान श्री पी.डी. गोयल जी ने बच्चों को लोहड़ी का महत्त्व समझाया तथा बच्चों तथा स्कूल परिवार को अपना आशीर्वाद व बधाई दी।

मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पुराना बाजार लुधियाना में मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया। विद्यालय में सुबह यज्ञ का आयोजन किया गया। उसके पश्चात बच्चों को विद्यालय की मुख्याध्यापिका श्रीमती ज्योति जोशी जी ने मकर संक्रान्ति के पर्व के बारे में बच्चों को बताया। इस स्कूल में हर शनिवार को यज्ञ होता है तथा बच्चों को श्री रमेश कुमार शास्त्री जी द्वारा नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती है। इस शुभ अवसर पर प्रबन्धकर्तृ सभा की मैनेजर श्रीमती राजेश शर्मा, प्रधान श्री सुशील मोदगिल तथा श्री विजय सरीन जी, श्री हरीश सूद जी तथा श्रीमती जनक रानी जी आदि सदस्य शामिल थे।

ज्योति जोशी कार्यकारी प्रिंसिपल

thearyasamaj.org

यज्ञोपवीत के तीन धागों का महत्त्व

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

यज्ञोपवीत के तीन धागे, मनुष्य के ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उऋण होने का संकेत करते हैं। यह धागे मनुष्य को याद दिलाते हैं कि तुम्हारे ऊपर जो तीन ऋण हैं, उनसे उऋण होना तुम्हारा पावन कर्त्तव्य है, जिसका मनुष्य को पालन करना चाहिए। वे तीन ऋण इस भाँति हैं।

१-ऋषि ऋण-ऋषि ऋण का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने बड़े परिश्रम और अपना पूरा जीवन स्वाध्याय में लगाकर, ईश्वर-प्रदत्त वेद ज्ञान का गहन अध्ययन करके उनके सही अर्थों के आधार पर उपवेद, उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण-ग्रन्थ व स्मृतियाँ आदि लिखकर हमको पढ़ने के लिए जो सामग्री दे दी है उसको पढ़कर हम अपने जीवन को उन्नत व पवित्र बनाकर मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं, इस लाभ के लिए जो हमारे ऊपर ऋषि-मुनियों ने उपकार किया है। उस ऋण से उऋण होने के लिए या उनके परिश्रम व स्वाध्याय को सफल बनाने के लिए एक ही मार्ग है, वह है हम उनके लिखे ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करें और अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को उन्नत बनाए। तभी हम उनके ऋण से उऋण हो सकेंगे। जैसे एक पिता अपना पूरा जीवन लगाकर जो धन-संग्रह करता है, वह अपने पुत्रों को दे देता हैं, तब उन पुत्रों का यह कर्त्तव्य है कि उस धन की वृद्धि करे और परोपकार के कार्यों में लगावे। इसी प्रकार हम भी ऋषि-ऋण से तभी मुक्त होंगे जब हम उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सफल व सुखी बनावें और उन्हीं ग्रन्थों के अनुसार और ग्रन्थ लिखकर आने वाली सन्तानों को और अधिक सामग्री देवें। यज्ञोपवीत का एक धागा इसी ऋण से मुक्त होने का सन्देश देता है।

२. देव ऋण-यह ऋण दो किस्म का होता है (१) पाँच जड़ देवता जिनमें पृथ्वी, जल, हवा, अग्नि व आकाश हैं। यह पाँचों देवता हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, आँख, नाक, कान, जिव्हा व त्वचा, इनको अपने प्रभाव से प्रभावित करके इनको ज्ञान यानि चेतना देकर कार्यों में प्रवृत्त करते है। अग्नि हमारी आँखों को रूप देखने की शक्ति देती है। आकाश शब्द के रूप में कानों को सुनने की शक्ति देता है। पृथ्वी गन्ध के रूप में नाक को सूँघने की शक्ति देती है। हवा स्पर्श के रूप में अनुभव करने की शक्ति देती है। इसी प्रकार जिव्हा को रस के रूप में पानी स्वाद लेने का अनुभव करवाता है। इन उपकारों के लिए हम इन जड़ देवताओं को यज्ञ द्वारा सन्तुष्ट व प्रसन्न करते हैं। यहाँ यह लिखना बहुत आवश्यक है कि जिस प्रकार शरीर के सब अंगों को खुराक व शक्ति पहुँचाने के लिए हम मुख से भोजन करते है। मुख से किया हुआ भोजन पेट में जाकर उसका खून व रस बनता है। उस खून व रस को हमारी शरीर की नशे (धमनियाँ) पूरे शरीर में जाकर प्रत्येक अंग को शक्ति देती है। इसी से उनमें कार्य करने की क्षमता आती है। इसी प्रकार अग्नि सब जड़ देवताओं का मुख है। यज्ञ द्वारा दिया हुआ घी तथा सामग्री, अग्नि में जल कर उसकी सुगन्ध हजार गुणा तेज होकर प्रकृत्ति के बाकी चारों देवताओं के पास पहुँचा देती है यानि पूरी प्रकृत्ति में जो प्राणियों द्वारा किये गये श्वास, टट्टी, पेशाब व पसीना आदि से जो दुर्गन्ध होती है वह यज्ञ द्वारा सुगन्धित हो जाती है। और पूरा वातावरण सुगन्धित व पवित्र हो जाता है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह जितना वातावरण अपने शरीर से बाहर आने वाली वस्तुओं से गन्दा करते हैं, उतना ही वातावरण को यज्ञ द्वारा सुगन्धित करे जिससे पूरा वातावरण सदैव ही पवित्र बना रहे। इसीलिए वेद भी ''यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'' कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। साथ ही ''स्वर्गकामो यजेत'' स्वर्ग की कामना करने वालों को यज्ञ करना चाहिए। दूसरा देव है, देवो का देव ''महादेव'' यानि ईश्वर है। ईश्वर ने प्राणी-मात्र पर विशेषकर मनुष्य के ऊपर बड़े उपकार किये हैं। ईश्वर ने मनुष्य के लिए सुन्दर सृष्टि की रचना करके मनुष्य के उपयोग, सहयोग व उपभोग के लिए जल, वायु, अग्नि, फल-फूल, पशु-पक्षी आदि नि:शुल्क देकर बड़ा उपकार किया है। इन्हीं के सहयोग से मनुष्य अपने जीवन को सुन्दर ढंग से चलाते हुए अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी बनाते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। ईश्वर के इस नि:स्वार्थ उपकार के लिए हम सन्ध्या करते हैं। सन्ध्या में हम ईश्वर के गुणों का गुण-गान करते हैं और उसके गुण दया, करूणा, परोपकार, सहृदयता, सहयोग आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करते हैं जिससे हमारा जीवन उत्तम और श्रेष्ठ बनता है और हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। इन उपकारों के ऋण से सन्ध्या द्वारा उऋण होते हैं। इसीलिए दिन में दो बार प्रात: व सायं सन्ध्या करना हमारे ऋषि-मुनियों ने बताया है, जिसे सब मनुष्यों को करना चाहिए।

३. पितृ ऋण-माता-पिता तथा वृद्ध जनों के हमारे ऊपर बहुत उपकार होते हैं। माता हमको नौ महीने पेट में रखती है, फिर बालक पन में हमारा पालन करती है। हमें चलना-बोलना सिखाती है। पिता अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाता है फिर उसका विवाह करके कमाने के योग्य बनाता है और अपना कमाया हुआ धन बच्चों को दे देता है। वृद्ध जनों का अनुभव और उनका आशीर्वाद हमारा बहुत सहयोगी बनता है। इस प्रकार माता-पिता व वृद्ध जनों का उपकार हमारे पूरे जीवन को सुखी व समृद्धशाली बनाने में अति सहयोगी रहता है, इसलिए हमें उनकी सेवा व सुश्रषा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए जिससे हम उनके ऋण से कुछ अंशों में उऋण हो सकें। इस प्रकार यज्ञोपवीत का तीसरा धागा हमें माता-पिता एवं वृद्धजनों की सेवा व सुश्रूषा करने का आदेश देता है। हमें यहाँ यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि सेवा और सुश्रूषा क्या होती है। सेवा को तो सभी जानते हैं माता-पिता की खाने-पीने, रहने-सहने आदि की सुन्दर व्यवस्था करना उनको हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए उनकी आज्ञा का पालन करना सेवा कहलाती है। सुश्रूषा का तात्पर्य है उनकी बात को आदरपूर्वक सुनना यानि उनकी बातों या उनकी इच्छाओं की अवहेलना न करना। उनसे हर काम पूछ कर करना और उनके महत्त्व को बनाए रखना उनकी सुश्रूषा करना है। आज कल माता-पिता व वृद्ध जनों की सेवा तो कुछ अंश में हो जाती है परन्तु सुश्रूषा का अभाव बना रहता है इसलिए सुश्रूषा यह भी बच्चों को पूरा ध्यान रखना चाहिए।

एक बात यह भी जानने योग्य है कि हमारे पौराणिक भाई छ: धागों की यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते है। उनका मानना है कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत नहीं पहनना चाहिए कारण ये चार दिन अपवित्र रहती है। परन्तु यह स्वार्थी पण्डितों का डाला हुआ अन्ध विश्वास है कारण अपवित्र तो मनुष्य भी टट्टी जाते वक्त तथा पेशाब करते वक्त रहता है, इसलिए जब पुरुष जनेऊ पहनता है तो स्त्रियाँ भी जनेऊ पहने तो कोई आपत्ति नहीं। स्त्रियों को यज्ञोपवीत न पहनने देना यानि उनको तीनों ऋणों से वंचित रखना, यह नारी जाति के ऊपर अन्याय करना है। क्या स्त्रियाँ अपने माता-पिता, सास-ससुर की सेवा व सुश्रूषा नहीं कर सकती ? इतना ही क्यों मध्य काल में तो इन स्वार्थी पण्डितों ने तो स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार भी छीन लिया था। यह तो देव दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार दिलाया। इसीलिए ऋषि ने आर्य समाज के इन नियमों में तीसरा नियम यह भी बताया कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (सज्जन व श्रेष्ठ पुरूषों व स्त्रियों) का परम धर्म है''। अब यह अन्ध विश्वास कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण नहीं करना चाहिए, इसे हटा देना चाहिए ताकि स्त्रियाँ भी यज्ञोपवीत धारण करके तीनों ऋणों का पालन कर सके जो ऋषि के बताने से वेदानुकूल है।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में भूमिकाओं की आत्मिक झलक

-ले० पंडित उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं का सम्पूर्ण ग्रन्थ में अपने आत्मीय विचारों का निचोड़ दिया है और हजारों आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण दिये हैं। प्रत्येक धर्मशील, कर्मशील, धर्मप्रचारक व आर्य को सत्यार्थ प्रकाश के पठन से पूर्व भूमिकाओं का अवश्य स्वध्याय करना चाहिए। मैंने प्रत्येक भूमिका में वर्णित महर्षि दयानन्द जी के आत्मीय चिन्तन का संक्षिप्त उल्लेख किया है।

महर्षि भूमिका में लिखते हैं, मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिये विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्या सत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य से झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो। सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर स्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो सबके अनुकूल उनका ग्रहण जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्ताएं तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दु:ख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दु:ख सागर में डुबा दिया है।

इनमें जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में घर प्रवृत्त होता है, उसे स्वार्थी लोक विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं। परन्तु **सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्थादेवयानः** अर्थात् जो सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आवलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।

नं० 1 अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में पुराणादिग्रन्थों के गुण दोष पृष्ठभूमि- जब तक मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत मतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्यों अन्य को आनन्द न होगा। यदि सब मनुष्य और विशेष विद्वत जन ईर्ष्या द्वेष छोड़कर सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहे, तो हमारे लिये ये बात असाध्य नहीं हैं। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सब को जाल में फँसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी एकमत हो जायें। इसके होने की युक्ति इसके पूर्ति में लिखेंगे। सर्व शक्तिमान परमात्मा एक मत में प्रवृत होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें।

नं० 2 अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में बौद्ध जैनियों के मत विषयक पृष्ठभूमि-जब विद्वान लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महाअन्धकार में पड़कर बहुत दु:ख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

यह बौद्ध जैन मत का विषय बिना इनके अन्य मत वालों को अपूर्व लाभ और बौद्ध कराने वाला होगा, क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्य मत वाले को देखने-पढ़ने व लिखने को नहीं देते। बड़े परिश्रम से मेरे और विशेष आर्य समाज मुम्बई के मंत्री सेठ सेवक लाल कृष्ण दास के पुरुषार्थ से ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं तथा काशीरथ जैन प्रभाकर यन्त्रालय से छपने और मुम्बई में प्रकरण रत्नाकर ग्रन्थ के छपने से सभी सब लोगों को जैनियों का मत देखना सहज हुआ है।

भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न दिखलाना। इसी से विदित होता है कि इन ग्रन्थों को बनाने वालों को प्रथम ही शंका थी कि इन ग्रन्थों में असम्भव बातें हैं, जो दूसरे मत वाले देखेंगे तो खण्डन करेंगे और हमारे मत वाले दूसरों का ग्रन्थ देखेंगे तो इस मत में श्रद्धा नहीं रहेगी। अस्तु जो भी हो, परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते, किन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकालने के पश्चात् दूसरों के दोषों में दृष्टि देकर निकालें।

नं० 3 अनुभूमिका उत्तरार्ध सत्यार्थ प्रकाश में ईसाई मत विषयक पृष्ठभूमि-सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषय पुस्तक को देखकर कुछ सम्मति व कुछ असम्मति देवें व लिखें, नहीं तो सुना करें। क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है, वैसे सुनने में बहुश्रुत होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके तथापि आप स्वयं तो समझ ही जाता है। जो कोई पक्षपात छोड़ यानारूढ़ होके देखते हैं, उनको न अपने और न पराये गुण-दोष विदित हो सकते हैं। **मनुष्य का आत्मा यथा योग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। जितना अपना पठित व श्रुत है, उतना निश्चय कर सकता है।** यदि एक मत वालों दूसरे मत के विषयों को जाने और न जाने तो यथावत संवाद नहीं हो सकता, किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाढ़े में गिर जाते हैं। ऐसा न हो इसलिये इस ग्रन्थ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा-थोड़ा लिखा है। इतने ही शेष विषयों में अनुमान कर सकता है, वे सच्चे हैं व झूठे ? जो-जो सर्वमान्य सत्य विषय है, वे तो सब में एक से है। झगड़ा झूठे विषयों का होता है। अथवा एक सच्चा दूसरा झूठा हो तो भी कुछ थोड़ा सा विवाद चलता है। यदि वादी प्रतिवादी सत्यासत्य निश्चय के लिये वाद प्रतिवाद करे तो अवश्य निश्चय हो जाये।

न० 4 अनुभूमिका उत्तरार्द्ध सत्यार्थ प्रकाश में मुसलमानों के मत विषय की पृष्ठभूमि-सब मतों के विषय का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होने से इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

thearyasamaj.org

मकर संक्रान्ति पर्व और हम

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

मकर संक्रान्ति पर्व सूर्य के मकर राशि में संक्रान्त वा प्रवेश करने का दिवस है। इस दिन को उत्साह में भरकर मनाने के लिए इसे मकर संक्रान्ति, लोहड़ी व पोंगल आदि नाम दिए गये हैं। मकर संक्रान्ति क्या है ? इसका उत्तर है कि पृथिवी एक सौर वर्ष में सूर्य की परिक्रमा पूरी करती है। पृथिवी वर्तुलाकार परिधि पर सूर्य का परिभ्रमण करती है। इस परिधि व पथ को ''क्रान्तिवृत'' कहते हैं। ज्योतिषियों ने क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं। उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाश में नक्षत्र-पुंजों से मिलकर बनी हुई मिलती-जुलती कुछ सदृश आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रखे गए हैं जैसे-1 मेष, 2. वृष, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ तथा 12. मीन। प्रत्येक भाग व आकृति राशि कहलाती है। जब पृथिवी क्रान्तिवृत्त पर भ्रमण करते हुए एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको ''संक्रान्ति'' कहते हैं। लोक व्यवहार में पृथिवी के संक्रमण को पृथिवी का संक्रमण न कह कर सूर्य का संक्रमण कहते हैं। 6 माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त के उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर उदय होता है। इन दोनों 6 माह की अवधियों का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर इसके उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायण में दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर निकलता हुआ दिखाई देता है और उसमें रात्रि की अवधि बढ़ती जाती है तथा दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन आरम्भ होता है। उत्तरायण में सूर्य के प्रकाश की अधिकता के कारण इसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी कारण देश व समाज में मकर संक्रान्ति के दिन को अधिक महत्त्व दिया जाता है। कुछ लोग कहानियां गढ़ने में माहिर होते हैं। अतः इस दिन के माहात्म्य से संबंधित कुछ कथायें प्रचलन में है परन्तु उनका प्रमाण ढूंढने पर निराशा ही हाथ लगती है जिसका कारण उनका काल्पनिक होना ही है। अतः आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में कल्पित कथाओं को मानना उचित नहीं है। मकर संक्रान्ति को मनाने का एक तर्क व युक्ति संगत कारण हमारी संस्कृति का मुख्य ध्येय-'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की भावना है। इसी कारण उत्तरायण के प्रथम या आरम्भ के दिन को अधिक महत्व दिया जाता है और अति प्राचीन काल से इस दिवस को एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति दिवस से पूर्व शीतकाल पूर्ण यौवन पर होता जिससे लोगों को काफी कष्ट होता है। इस दिन व इसके बाद रात्रि काल घटने व दिवस की अवधि बढ़ने से सूर्य का प्रकाश अधिक देर तक मिलने लगता है जिससे मनुष्यों को सुख का अनुभव होता है। इस मनोवांछित परिवर्तन के कारण अपने उत्साह को प्रकट करने के लिए भी इस दिन को एक पर्व का रूप दिया गया है।

महाभारत काल में कथा आती है कि भीष्म पितामह अर्जुन के बाणों से बिंध जाने के बाद युद्ध करने में सर्वथा असमर्थ हो गये थे। उनके प्राणान्त का समय आ गया था। उन्होंने पूछा कि अपने समीपस्थ लोगों से तिथि, महीना व अयन के बारे में पूछा ? उन्हें बताया गया कि उस समय दक्षिणायन था। दक्षिणायन में मृत व्यक्ति की वह उत्तम गति नहीं मानी जाती जो कि उत्तरायण में प्राण छोड़ने पर होती है। भीष्म पितामह बाल ब्रह्मचारी थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य एवं साधना द्वारा मृत्यु व प्राणों को वश में कर रखा था। दक्षिणायन के विद्यमान होने का तथ्य जान लेने के बाद उन्होंने कहा कि अभी प्राण त्यागने का उत्तम समय नहीं है, अतः वह उत्तरायण के प्रारम्भ होने पर प्राणों का त्याग करेंगे। इस घटना से यह अनुमान है कि आज के दिन ही भीष्म पितामह ने अपने प्राणों का त्याग किया था। इससे आज की तिथि उनकी पुण्य तिथि सिद्ध होती है। अपने महाप्रतापी पूर्वजों को उनके जन्म दिन पर याद करने की परम्परा देश में है। उनके जन्म की तिथि तो सुरक्षित न रह सकी, अतः आज उनकी पुण्य तिथि का दिन ही उनका स्मृति दिवस है। सारा देश उनसे ब्रह्मचर्य की शिक्षा ले सकता है। उनका दूसरा गुण था कि पिता को प्रसन्न रखना। पिता की प्रसन्नता के लिए ही युवक देवव्रत, भीष्म पितामह का भीष्म प्रतिज्ञा करने से पूर्व का नाम, ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने और अपनी सौतेली माता व उनके होने वाले पुत्रों की रक्षा व देश की सुरक्षा का व्रत लिया था। उनका त्याग प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। अतः आज के दिन उन्हें भी याद करना उचित है। वेदों की एक सूक्ति है- 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।' अर्थात् ब्रह्मचर्य रूपी व्रत से मनुष्य मृत्यु को परास्त कर सकता है। आधुनिक समय में महर्षि दयानन्द ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत रखकर देश व धर्म की अपूर्व सेवा की। उन्होंने वेदों का पुनरुद्धार कर इतिहास में महान कार्य किया। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थ लुप्त हो चुके थे। वेदों के नाम पर अनेक मिथ्या विश्वास प्रचलित थे। अपने अपूर्व ज्ञान व शक्तियों से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सत्य अर्थों को भी खोज निकाला था। आज वेद संसार में सर्वोत्कृष्ट धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हैं। अतः हमने मकर संक्रान्ति को भीष्म पितामह स्मृति दिवस एवं ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा दिवस मकर संक्रान्ति के स्वरूप व इससे संबंधित कुछ बातों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

आशा है कि पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

पृष्ठ 5 का शेष- महर्षि दयानन्द जी का.....

न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ-मूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है। किन्तु जो-जो भलाई है, वही भलाई और जो बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी का झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो व माने व न मानें। किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता।

और यही सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करे करावें, क्योंकि पक्षपात से क्या-क्या अनर्थ जग में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भंगुर जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्यों को रखना मनुष्यपन से बाहर है।

इसमें जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो तो लोग विदित कर देंगे, पश्चात् जो उचित होगा तो माना जायेगा, क्योंकि यह लेख हट दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध घटाने के लिये किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक रह परस्पर को लाभ पहुँचाना हमारा मुख्य कर्म हैं

लेखक

यह मैंने प्रयास करके सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं से कुछ अंश लिखे हैं, ताकि पाठकों को भूमिकाएं पढ़ने में रुचि बढ़ जायें और अनार्ष ग्रन्थों की सत्यता प्रतीत हो।

thearyasamaj.org

जनकल्याण दिवस पर आर्य समाज ने बच्चों को उपहार के रूप में बांटे स्वैटर

आर्य समाज नवांशहर की ओर से मंगलवार को जन कल्याण दिवस का आयोजन किया गया। लोहड़ी के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज की ओर से दोआबा आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल के बच्चों को लोहड़ी उपहार के रूप में गर्म स्वैटर व जूते दिए गए। इस दौरान अपने संबोधन में आर्य समाज के वाइस प्रधान विनोद भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज हर साल जन कल्याण दिवस का आयोजन करता आया है तथा इस साल भी प्रिंसिपल शशि शर्मा की याद में यह कार्यक्रम मनाया गया है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के दौरान करीब 50 बच्चों को लोहड़ी उपहार के रूप में स्वैटर व 20 बच्चों को जूते प्रदान किए गए। मौके पर स्कूल प्रबंधक कमेटी के वाइस प्रधान ललित मोहन पाठक, आर्य समाज के मंत्री जीया लाल शर्मा, प्रिंसिपल राजिंदर सिंह गिल, वरिंदर सरीन, अरविंद नारद, कृष्ण गोयल, सुरिंदर मोहन तेजपाल, ललित शर्मा, विकास तेजी, सतीश शास्त्री, भास्कर उपस्थित थे।

-अरविंदर नारद, प्रचार मंत्री आर्य समाज, नवांशहर

स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सैन्टर स्थापित

बड़े हर्ष का विषय है कि यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन भारत सरकार की ओर से प्रदत्त आर्थिक सहयोग से दोआबा कालेज जालन्धर में 'स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सैन्टर' सत्र 2014-15 से स्थापित किया गया है। इस सैन्टर के माध्यम से स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तथा आम जनता तक पहुंचाने के साथ-साथ शोधकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि भी आयोजित किए जाएंगे। स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य को डिजिटल रूप में इण्टरनेट (www.doaba college.net) पर उपलब्ध कराने की योजना भी तैयार की गई है। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, आर्य सामाजिक संस्थाओं तथा आर्यजनों से निवेदन है कि यदि उनके पास स्वामी दयानन्द का कोई भी ग्रन्थ किसी भी भाषा के किसी भी फॉन्ट (चाणक्य, कृतिदेव, शूषा आदि) में कम्पोज किया हुआ है तो वे हमारे email : dayanandstudy@doabacollege.net पर वह सामग्री भेजने की कृपा करें। हम उस सामग्री को इन्टरनेट के लिए यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित कर कालेज की उपरोक्त वैबसाइट पर अपलोड कर देंगे। आशा है ऋषिवर दयानन्द के इस पुनीत कार्य में आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

-डा. नरेश कुमार धीमान

आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना में आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

बालकों की तरह विद्यालयों में पढ़ने वाली कन्याओं को भी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराने तथा उन्हें आत्मरक्षा की शिक्षा देकर साहस एवं निर्भीक बनाने के लिए आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना में आर्य वीरांगना शिविर के सफल आयोजन में 150 से अधिक कन्याओं ने गुरुकुल के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के मार्ग दर्शन में वैदिक धर्म की सिद्धान्तों के ज्ञान प्राप्त करने के साथ आत्मरक्षा के उपायों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इन कन्याओं को प्रशिक्षण देने के लिए वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री हरि सिंह जी आर्य दिल्ली से पधारे थे। कन्याओं को प्रेरणा देने के लिए स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य कुञ्जदेव मनीषी, पूर्व विधायक श्री राजू भाई धोलकिया, आचार्या पुष्पाञ्जली शास्त्री का उपदेश निरन्तर होता रहा। इस प्रशिक्षण के सारी आर्थिक व्यवस्था गुरुकुल आश्रम की ओर से की गयी। इस शिविर का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्री बसन्त भाई पण्डा ने किया।

-मनुदेव वाग्मी

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब) दूरभाष:- 0161-2459563 पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल छठी कक्षा (आयु + 9 से -11 वर्ष) से कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2015 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 05 अप्रैल 2015 दिन रविवार को प्रात: 8:00 बजे होगी।
- सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थय परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-सत्यानन्द जी मुंजाल (कुलपति)

शांतिवन आश्रम (टांगरपाली) में युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

पश्चिम ओडिशा में आर्ष पाठविधि का नि:शुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित शांतिवन आश्रम टांगरपाली में युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल शिविर उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह शिविर 25 से 30 दिसम्बर तक योग्य शिक्षकों द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये।

समापन समारोह पर गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, श्री अशोक मेहेर, श्री विभूति साहू, श्री कृपा साहू, श्री तपोधन प्रधान तथा अन्य अतिथिगणों की उपस्थिति थी। कार्यक्रमोपरान्त स्वामी व्रतानन्द के द्वारा गरीबों को कम्बल वितरण किया गया। अन्त में शांतिवन आश्रम के आचार्य स्वामी नारदानन्द जी द्वारा आर्यवीरों तथा अतिथि महानुभावों को शुभकामना देते शांतिपाठ पूर्वक इस शिविर का समापन हुआ।

-डॉ. कुञ्जदेव मनीषी, उपाचार्य, गुरुकुल आश्रम आमसेना

आर्य कालेज धूरी में लोहड़ी का पर्व मनाया गया

दिनाक: 13-01-2015 दिन मंगलवार को आर्य कालेज के प्रांगण में कालेज के नव नियुक्त डायरेक्टर डॉ. एस के उप्पल के नेतृत्व में व प्रिंसीपल धर्म देव सिंगल की अगुआई में लोहड़ी व मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया। इस अवसर पर पं० शैलेश कुमार शास्त्री के द्वारा वैदिक मंत्रों से मुख्य अतिथि S.D.M. माननीया श्रीमति ईशा सिंगल बैबी द्वारा लोहड़ी को अग्नि प्रज्वलित कर के अग्नि में मुंगफलियां, रौड़ी तिल के लड्डू, तिल, शक्कर डालकर आहुतियां प्रदान की गई। इस के उपरान्त कालेज की छात्राओं ने लोहड़ी के गीत गा कर रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। तथा S.D.M. साहिबा ने लोहड़ी के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि लड़कियों का हमारे समाज में अहम रोल है, यदि देश की बेटी खुशहाल होगी तो देश खुशहाल होगा। इस के बाद डॉ. एस.के. उप्पल जी ने कालेज के उपजेक्टीव के बारे में प्रकाश डाला और आये हुए मेहमानों का व कालेज की प्रबन्धक कमेटी का धन्यवाद किया। इस पर्व पर उपस्थित, आर्य कालेज के प्रधान अशोक जिन्दल, पैटरन आर.पी. शर्मा. कार्यकारी प्रधान प्रहलाद आर्य, मैनेजर पवन कुमार गर्ग, महामंत्री राम पाल आर्य, अशोक रमेश आर्य, सोम प्रकाश आर्य, सतीश आर्य, संरक्षक महाशय प्रतिज्ञा पाल जी, डॉ. एस.के. सरीन, श्रीमति कृष्णा आर्या, मोनिका वातस प्रिंसीपल यश चौधरी स्कूल, प्रिंसीपल वी.एल. कालिया तथा शहर के गणमान्य लोग उपस्थित हुए। **-मैनेजर पवन कुमार गर्ग**

thearyasamaj.org

लड़कियों को शिक्षित करने हेतु स्वामी दयानंद जी का अहम योगदान

आर्य समाज बटाला द्वारा विधवा व बेसहारा महिलाओं को राशन वितरित करने एवं बेसहारा लोगों की आँखों के इलाज हेतु कार्यक्रम का आयोजन आर्य मॉडल स्कूल ओहरी गेट में प्रधान परविन्द्र चौधरी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि श्री विजय चोपड़ा थे, जबकि समारोह की अध्यक्षता प्रो. स्वतंत्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा की गई। इस दौरान विशेष रूप से पूर्व भाजपा विधायक जगदीश राज साहनी, सुभाष ओहरी जिलाध्यक्ष शिरोमणि अकाली दल शहरी गुरदासपुर, भूषण बजाज, पवन भल्ला, जे.एन. शर्मा, विजय अग्रवाल, बलविन्द्र मेहता, जगदीश महाजन जिलाध्यक्ष आर्य समाज, अशोक अग्रवाल, सोहन लाल प्रभाकर, ऋषि दत्त गुलाटी, शक्ति शर्मा भी पहुंचे। समारोह को संबोधित करते हुए श्री विजय चोपड़ा ने कहा कि हमारे समाज को स्वामी दयानंद की बहुत बड़ी देन है और लड़कियों को शिक्षित करने में स्वामी जी का अहम योगदान है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज बटाला, जो लड़कियों व जरूरतमंदों की सेवा हेतु तत्पर रहता है, ने भी शहर में एक अहम स्थान हासिल किया है और इसी तरह की सेवा करते हुए यह बुलंदियों को छुएगा। श्री विजय चोपड़ा ने नशों के बारे में बात करते हुए कहा कि हमारे राज्य की जवानी को नशों ने बर्बाद करके रख दिया है, इसलिए समय की मुख्य आवश्यकता है कि अन्य नशों के साथ-साथ शराब की बिक्री पर भी पूरी तरह से रोक लगे, ताकि बच्चों को नशों जैसी भयानक कुरीति से बचाया जा सके। उन्होंने स्कूल मैनेजमैंट को सुझाव देते हुए कहा कि स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ प्रोफैशनल कोर्स भी लड़कियों को करवाए जाएं जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके। उन्होंने विशेष रूप से कम्प्यूटर व ब्यूटीशियन के कोर्स शुरू करने की जरूरत पर जोर दिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. स्वतंत्र कुमार ने कहा कि आर्य समाज का जहां स्वतंत्रता की लड़ाई में 80 प्रतिशत योगदान रहा है, वही सामाजिक कुरीतियों को दूर करने हेतु भी आर्य समाज ने एक अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि देश के विधान में जो नियम आर्य समाज ने बनाए थे, उन्हें भी शामिल किया गया है जिनमें छुआछूत का खात्मा स्त्री जाति को पुरुष के बराबर दर्जा देना आदि शामिल है। आर्य समाज के प्रधान परविन्द्र चौधरी ने बताया कि आज आर्य समाज बटाला की ओर से 16 बेसहारा महिलाओं को राशन सामग्री वितरित की गई है और पिछले दिनों में 80 बच्चों को स्वैटर वितरण किए गए थे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की हर संभव कोशिश रही है कि गरीब व बेसहारा लोगों की अधिक से अधिक मदद की जाए।

आर्य समाज औहरी चौक बटाला द्वारा विधवा व बेसहारा महिलाओं को राशन वितरित किया गया। इस अवसर पर हिन्द समाचार पत्र समूह के मालिक श्री विजय चोपड़ा जी भी पधारे।

समारोह में आर्य समाज की तरफ से जम्मू-कश्मीर मुख्यमंत्री राहत फण्ड हेतु श्री विजय कुमार चोपड़ा जी को 11,000 रुपए का चैक भेंट किया गया। इस दौरान आर्य गल्ज स्कूल की प्रिं. सोनिया सच्चर, आर्य मॉडल स्कूल की प्रिं. रजनी बहल, के.सी सत्वर, जितेन्द्र कल्याण, सुरिन्द्र शर्मा, वीरेन्द्र विग, डॉ. गुरपाल सिंह, एस.एम.ओ. सुखदीप सिंह, कुलवंत सिंह पूर्व पार्षद सहित समूह स्कूल स्टाफ व छात्र वर्ग उपस्थित था।

पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सत्संग का आयोजन

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक सत्संग एवं यज्ञ का आयोजन श्री मुलखराज राज आर्य जी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य यजमान रणजीत आर्य, सुभाष आर्य, सुदर्शन आर्य व जतिन्द्र आर्य सपरिवार बनें और यज्ञ में आहुतियां ड़ाली। इसके उपरान्त सोनू भारती ने अपने मधुर भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान चौ. ऋषिपाल सिंह जी ऐडवोकेट ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मुलखराज आर्य एक चलती फिरती आर्य समाज थे और कर्मठ कार्यकर्ता थे। पूर्व कुलपति एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने कहा कि श्री मुलखराज आर्य एक सच्चे आर्य समाजी थे। उनमें ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी एवं उनके पुत्रों में अपने पिता के सभी गुण विद्यमान हैं। इसके पश्चात महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने कहा कि उनका परिवार समाज के श्रेष्ठ कार्यों में हमेशा बढ़ चढ़ कर भाग लेता है। इसके बाद आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य ने परिवार की तरफ से आए हुए सभी विद्वानों, अतिथियों महानुभावों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में हर पर्व त्योहार बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। इस अवसर पर सर्वश्री अश्वनी डोगरा, रमेश मुटरेजा, चौ. हरीचन्द, भूपेन्द्र उपाध्याय, ईश्वर चन्द्र रमपाल, बैजनाथ, राजीव शर्मा, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, अनु आर्या, इन्दु आर्या, शिखा आर्या, राजेश वर्मा, स्वर्ण शर्मा, राहुल शर्मा, अमन आर्य, गौरव, दिव्या आर्या, सरिता आर्या, सृष्टि आर्या, वंश आर्य, राजीव कुन्द्रा, बलराज मिश्रा, अमरनाथ, हर्ष लखनपाल, नवीन कुमार चावला, पवन शर्मा, मीनू सिंह, कृष्णा देवी, मोहन लाल, लक्ष्मी सहगल, दीपक अग्रवाल, पूनम अग्रवाल, पवन शुक्ला, अनिल मिश्रा, अर्चना एवं सभी भगत सिंह कालोनी के लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ तथा आर्य परिवार की ओर से ऋषि लंगर लगाया गया।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में श्री मुलखराज आर्य जी की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने सम्बोधित किया। उनके साथ बैठे हैं श्री चौधरी ऋषि पाल सिंह जी एडवोकेट सभा उप प्रधान एवं सभा के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी।

–रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।